29

निबंध कैसे लिखें

पिछले पाठों में आप सार-लेखन और भाव-पल्लवन के बारे में पढ़ चुके हैं। आशा है कि आप अब तक अपनी बातों को लिखित रूप में ठीक ढंग से व्यक्त करना सीख चुके होंगे। आपने यह भी पढ़ा कि निबंध लिखते समय अपने भावों और विचारों को एकत्रित कर उन्हें सही क्रम देना, उदाहरण देकर अपनी बात की पुष्टि कर उन्हें प्रभावशाली ढंग से कहना या लिखना ही निबंध लिखने का कौशल है। अब तक आप कई सुप्रसिद्ध रचनाकारों के निबंध भी पढ़ चुके हैं। क्या आप जानते हैं कि लेखन या रचना का सर्वोत्तम रूप निबंध में ही देखने को मिलता है और निबंध को ही उत्तम गद्य-लेखन की कसौटी माना गया है। इस कला में आप भी सिद्धहस्त हो सकते हैं, आइए, यह हम इस पाठ में सीखते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- आदर्श निबंध के गुणों का उल्लेख कर सकेंगे;
- निबंध को विभिन्न चरणों में बाँट कर उन पर अनुच्छेद लिख सकेंगे;
- निबंध के प्रकारों का वर्गीकरण कर सकेंगे;
- निबंध की रूपरेखा निर्धारित कर उपशीर्षक दे सकेंगे;
- शीर्षक तथा उपशीर्षकों के अनुरूप निबंध को विस्तार दे सकेंगे;
- किसी दिए गए विषय पर आवश्यकतानुसार वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक तथा आलोचनात्मक निबंधों का लेखन कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

निम्नलिखित दोनों अनुच्छेदों को पढ़िएः

1. भारत-भूमि सदा से वीर वसुंधरा रही है। अन्याय और अत्याचार का सामना करने के लिए समय-समय पर यहाँ एक-से-एक वीर पैदा होते रहे हैं। उन्होंने अपने

शौर्य, उत्साह और त्याग का जो आदर्श उपस्थित किया है, वह आज भी हमें प्रेरणा देता है। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ऐसी ही वीरांगना थीं। उन्होंने अल्प वय में ही जिस वीरता का प्रदर्शन किया, वह हमारे इतिहास की अमूल्य निधि है।

2. भारत की ज़मीन बहादुरी की भूमि है। यहाँ बुराई और अत्याचार का सामना किया गया। यह समय आने पर बहुत से बहादुरों ने किया। उन्होंने अपनी बहादुरी दिखाई अपने जोश और परित्याग का अच्छा रूप हमें दिया। उससे हम में भी खूब उत्साह पैदा हो गया। लक्ष्मीबाई नामक रानी जो झाँसी की थी, उसने छोटी उमर में ही जो वीरता दिखा दी उसे आज भी भारत का बहुमूल्य खज़ाना कह सकते हैं।

ऊपर लिखे दोनों अनुच्छेदों में वर्णित विषय, विचारक्रम, शब्दों के चुनाव, वाक्यों की रचना तथा भाषा-शैली पर ध्यान दीजिए। निश्चित रूप से आपको पहला अनुच्छेद पसंद आया होगा। प्रत्येक अनुच्छेद के लिए यहाँ एक-एक पंक्ति लिखिए।

....

....

ऊपर के दोनों अनुच्छेद झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई से संबंधित हैं। इनमें यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि विषय या विचार एक होने पर भी भाषा के व्यवहार में भिन्नता के कारण ही उनके प्रभाव में अंतर आ गया है। जी, हाँ। यहाँ हम कहना चाहते हैं कि आप पहले अनुच्छेद के समान लिखना सीखें तब आप परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त कर सकते हैं।

29.1 निबंध के गुण

अक्सर विद्यार्थी परीक्षा भवन में कुछ निबंध रट कर पहुँच जाते हैं। यदि उन गिने चुने निबंधों में से प्रश्न पत्र में कुछ आ गया तो बहुत अच्छे! वर्ना उनके हाथ-पैर फूल जाते हैं। कई विद्यार्थी तो इस प्रश्न को छोड़ कर ही चले जाते हैं। ऐसी स्थिति से बचने के लिए सबसे पहले अच्छे निबंध के गुणों को पहचानना बहुत आवश्यक है। उससे भी पहले आवश्यक है यह जानना कि निबंध क्यों लिखा जाता है।

निबंध लेखन

- लिखित आत्माभिव्यक्ति की शक्ति का विकास करता है, जिसे स्वतंत्र रचना-शक्ति या सृजन-शक्ति भी कहते हैं।
- भाषा के शुद्ध परिमार्जित और प्रभावशाली प्रयोग की क्षमता का विकास करता है।
- किसी दिए गए विषय पर स्पष्ट और क्रमबद्ध रूप में विचारों को लिपिबद्ध करने के कौशल का विकास करता है।
- विषय को एकसूत्रता में पिरोने का कौशल विकसित करता है।
- भाषा और शैली में निखार लाता है।

अब आइए, निबंध के बारे में कुछ और जानकारी हासिल करें–

निबंध शब्द 'नि+बंध' से बना है, जिसका अर्थ है–अच्छी तरह से बँधा हुआ। निबंध में व्यक्त किए गए भाव या विचार एक-दूसरे से शृंखलाबद्ध होते हैं। इसकी भाषा विषय के अनुकूल होती है। इसके माध्यम से नपे-तुले शब्दों में अधिक-से-अधिक बातें कही जाती हैं। निबंध की शक्ति है–अच्छी भाषा। भाषा के अच्छे प्रयोग द्वारा ही भावों, विचारों और अनुभवों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया जा सकता है।

अच्छे निबंध की विशेषताएँ हैं:

• कसावट, • प्रभावशाली भाषा, • विषयानुकूलता

इसे इस रेखाचित्र से भी समझा जा सकता है–

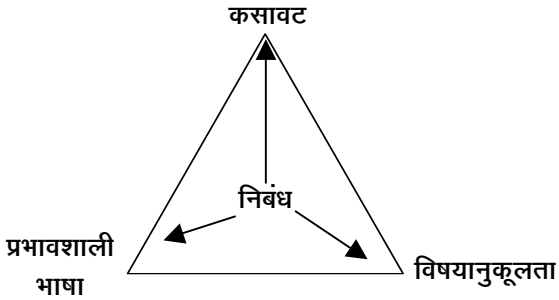

कसावट

आप पढ़ चुके हैं–निबंध का अर्थ ही है–भली-भाँति बँधा हुआ या कसा हुआ। निबंध में विचार और भाषा, दोनों में ही कसावट का गुण होना आवश्यक है। निबंध लिखते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि उसमें व्यक्त किए गए विचार या भाव एक निश्चित क्रम में हों और आपस में जुड़े हुए हों। आप अपनी बात को तर्क पूर्ण ढंग से लिखें, जिसे पढ़ने के बाद पाठक किसी निष्कर्ष पर पहुँच सके। उदाहरण के लिए नीचे लिखे दो वाक्यों पर ध्यान दीजिए:

1. ज्ञानी मनुष्य सब प्राणियों को अपने अंदर और अपने आपको सब प्राणियों के अंदर देखता है।
2. ज्ञान वाला जीव हर प्रकार के जीवों को अपने आप के भीतर और अपने को सभी जीवों के बीच में पाता है।

उपर्युक्त वाक्यों में एक ही बात को कहने की कोशिश की गई है, किंतु कुछ शब्दों के हेर-फेर से दूसरे वाक्यों में कसावट का अभाव हो गया है। इसलिए वाक्य–1 को पढ़कर मन पर जैसा प्रभाव पड़ता है, वैसा वाक्य–2 को पढ़ने से नहीं होता।

प्रभावशाली भाषा

शब्द का वाक्य में तथा वाक्य का अनुच्छेद में उचित तथा क्रमबद्ध प्रयोग होने से भाषा में प्रभाव उत्पन्न होता है। अच्छे निबंध में शब्द, वाक्य तथा अनुच्छेद एक विशेष क्रम में गुँथे हुए होते हैं। उनका क्रम और परस्पर संबंध इस प्रकार का होता है कि

इसमें तनिक भी उलट-फेर करने से अस्वाभाविकता आ जाती है। यदि आपके लिखे हुए निबंध में भाषा की यह विशेषता है, तो उसे पढ़कर मन पर अच्छा प्रभाव अवश्य ही पड़ेगा। भाषा को प्रभावी बनाने के बारे में आप विस्तार से पहली पुस्तक की पाठ संख्या – **9 (अच्छा कैसे लिखें)** में पढ़ चुके हैं। फिर भी याद रहे **निबंध की भाषा सरल, स्पष्ट, व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध, प्रभावपूर्ण और गठी हुई होनी चाहिए।**

निबंध को लिखते समय यदि आप आवश्यकतानुसार उदाहरण, दृष्टांत और सूक्तियों का भी प्रयोग करते रहें, तो वह और अधिक रोचक तथा प्रभावशाली बन जाएगा। इस गुर को प्राप्त करने के लिए आप निम्नलिखित क्रियाएँ कीजिए – अधिक से अधिक पठन का अभ्यास, मुहावरों और लोकोक्तियों का उचित अवसरानुकूल सही प्रयोग, अच्छी बातों का स्मरण, देशाटन और सत्संग या बड़ों से वार्तालाप द्वारा प्राप्त किए गए अनुभव।

विषयानुकूलता

निबंध की भाषा विषय तथा विचारों के अनुरूप होनी चाहिए। उदाहरण के लिए सरल तथा सरस विषय पर लिखे गए निबंध की भाषा भी सरल, मुहावरेदार तथा आम बोलचाल के निकट होगी। किंतु गंभीर और साहित्यिक निबंध में तत्सम शब्दावली तथा साहित्यिक भाषा का प्रयोग आवश्यक हो जाता है। भाषा और शैली की दृष्टि से भाव-प्रधान निबंध भावात्मक होगा, तो विचारप्रधान निबंध में चिंतन-मनन और तर्क-वितर्क की अधिकता होगी। इन विशेषताओं के अतिरिक्त विचारों की मौलिकता और क्रमबद्धता भी अच्छे निबंधों की विशेषता होती है।

पाठगत प्रश्न 29.1

1. निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए। यदि कथन सही है, तो उसके सामने (√) का निशान और गलत हो, तो (X) का निशान लगाइए :
   (क) निबंध में व्यक्त विचार और भाषा में कसावट होनी चाहिए। ( )
   (ख) सुगठित और सुसंबद्ध भाषा से निबंध में अस्वाभाविकता आ जाती है। ( )
   (ग) विचारों के अनुरूप भाषा होने से निबंध का प्रभाव बढ़ जाता है। ( )
   (घ) गंभीर और साहित्यिक निबंध की भाषा अधिक मुहावरेदार और आम बोलचाल की भाषा होगी। ( )

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

2. निबंध लिखने का अभ्यास आवश्यक है क्योंकि यह–
   (क) दृष्टांतों और सूक्तियों का उचित प्रयोग करना सिखाता है।
   (ख) लेखन कौशल में निपुण बनाता है।
   (ग) विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त करना सिखाता है।
   (घ) उपर्युक्त तीनों

टिप्पणी

29.2 निबंध के अंग

निबंध का आकार निश्चित नहीं किया जा सकता क्योंकि विषय के अनुसार वह सीमित भी हो सकता है और कुछ बड़ा भी। लेकिन इतना तो तय ही है कि अपने विचारों को सुसंगत और क्रमबद्ध रूप में लिखना चाहिए। आप अपनी बात कहाँ से शुरू करें, क्या-क्या लिखें और अंत कैसे करें, इसके लिए आवश्यक है कि निबंध लिखने से पहले उसकी रूपरेखा बना ली जाए। एक प्रकार से निबंध का पूरा खाका तैयार करना ही रूपरेखा कहलाता है। रूपरेखा बनाने से पूर्व हम यह जान लें कि निबंध के तीन अंग होते हैं:

प्रस्तावना या भूमिका, **मुख्य अंश** या विषयवस्तु का विवेचन, **उपसंहार** या अंत।

आइए, अब हम निबंध के अंगों को विस्तार से जानें:

प्रस्तावना

निबंध के प्रारंभ में उसकी प्रस्तावना या भूमिका लिखी जाती है। निबंध की प्रस्तावना रोचक तथा विषय-वस्तु को स्पष्ट करने वाली होनी चाहिए। इसके द्वारा पाठक के मन में निबंध को विस्तारपूर्वक पढ़ने की उत्सुकता जाग उठती है। प्रस्तावना संक्षिप्त किंतु प्रभावशाली होनी चाहिए। निबंध का पहला अनुच्छेद ही उसकी प्रस्तावना या भूमिका होता है। जहाँ तक संभव हो थोड़े वाक्यों में ही निबंध के मुख्य विषय के बारे में संकेत कर देना चाहिए।

मुख्य अंश

प्रस्तावना के बाद निबंध का महत्त्वपूर्ण भाग मुख्य अंश होता है। यहाँ विषय-वस्तु का विस्तृत विवेचन किया जाता है। निबंध से संबंधित सामग्री को चार-पाँच छोटे-बड़े अनुच्छेदों में इस प्रकार व्यक्त किया जाता है कि उसके सभी पहलुओं पर प्रकाश पड़ सके।

मुख्य घटना, भाव या विचार प्रस्तुत करते समय उसके क्रम का ध्यान रखना आवश्यक है साथ ही विचार तर्कसंगत हों और भाषा प्रभावशाली। विषय की पुष्टि के लिए जो भी उद्धरण, दृष्टांत या प्रमाण चुने जाएँ, वे सरल, आकर्षक तथा प्रभावोत्पादक हों। जहाँ तक संभव हो, वे पाठक के दैनिक जीवन के अनुभवों से संबंधित हों। प्रत्येक मुख्य विचार या बात के लिए एक अनुच्छेद बनाया जाए। सभी अनुच्छेद आपस में इस प्रकार संबद्ध हों कि विचारों की एक अटूट शृंखला बनी रहे। विचार एक-दूसरे से जुड़े रहें।

हम पढ़ चुके हैं कि निबंध लेखन में अच्छी भाषा-शैली का बड़ा महत्त्व है। यदि भाषा विषय के अनुरूप हो तथा शुद्ध, सरल, स्पष्ट, कसी हुई तथा प्रभावशाली हो तो पाठक निबंध को पढ़कर प्रभावित होगा। निबंध लेखन के समय सामान्यतः समास शैली का प्रयोग किया जाना चाहिए।

टिप्पणी

उपसंहार

निबंध का अंतिम भाग उपसंहार कहलाता है। यहाँ विषय-वस्तु के विवेचन के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाते हैं। कभी-कभी लेखक अपना विचार या प्रतिक्रिया भी व्यक्त करता है। निबंध का अंत ऐसा होना चाहिए कि उसका स्थायी प्रभाव पाठक पर पड़ सके। प्रस्तावना की भाँति उपसंहार भी एक ही अनुच्छेद का होता है। संक्षिप्त होने पर भी निबंध का यह अंश पाठक को प्रभावित करने की सबसे अधिक क्षमता रखता है। निबंध का मूल्यांकन करते समय परीक्षक उपसंहार को अवश्य पढ़ता है। यही वह कसौटी है जिस पर परख कर प्रायः परीक्षक अंक देने का निर्णय करता है। अतः उपसंहार संक्षिप्त, सुसंगठित, स्पष्ट और शुद्ध होना चाहिए। किसी लोकोक्ति, सूक्ति अथवा अभीष्ट सामग्री के समावेश से इसका अंत करें तो प्रभावी रहता है।

क्रियाकलाप

अभी कुछ ही समय पूर्व आपने 'कुटज' नामक निबंध पढ़ा। उस निबंध की प्रस्तावना, मुख्य अंश और उपसंहार का संक्षिप्त रूप एक-एक, दो-दो वाक्य में यहाँ लिखिए—

प्रस्तावना ....

....

मुख्य अंश..

....

उपसंहार..

....

पाठगत प्रश्न 29.2

1. निम्नलिखित कथनों के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

   (क) निबंध के प्रारंभ में भूमिका या ....लिखी जाती है।

   (ख) मुख्य अंश लिखते समय विषय-वस्तु का क्रमानुसार ....किया जाता है।

   (ग) निबंध की भाषा विषय के ....होनी चाहिए।

   (घ) ....में प्रायः निबंध का निष्कर्ष होता है।

29.3 निबंध की रूपरेखा

निबंध की रूपरेखा प्रायः दो प्रकार से बनाई जा सकती है—विस्तृत तथा संक्षिप्त। यदि रूपरेखा में प्रत्येक बिंदु के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण तथ्य, घटना, विचार तथा उद्धरण आदि

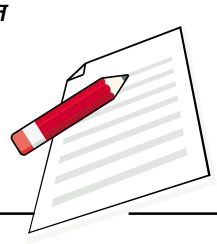

लिखते हैं तो वह विस्तृत रूपरेखा कहलाती है। जहाँ केवल मुख्य बिंदुओं को ही लिख दिया जाए, उसे संक्षिप्त रूपरेखा कहते हैं। नीचे दिए गए उदाहरणों से यह बात आपको अधिक स्पष्ट हो जाएगी।

(क) विस्तृत रूपरेखाएँ

मान लीजिए हमें 'वायुयान' शीर्षक से एक निबंध लिखना है। इसकी रूपरेखा बनाने से पूर्व किसी पुस्तक या विशेषज्ञ से हमें यह जानकारी प्राप्त करनी होगी कि वायुयान का आविष्कार कब, कहाँ और कैसे हुआ? उसकी बनावट और कार्य प्रणाली की सामान्य जानकारी भी हमें अपने अनुभव तथा चिंतन से खोजनी होगी। आइए, 'वायुयान' शीर्षक निबंध की एक विस्तृत रूपरेखा बनाएँ, यह एक वर्णनात्मक निबंध है।

वायुयान (वर्णनात्मक निबंध)

प्रस्तावना

पक्षियों को देखकर मनुष्य की उड़ने की कल्पना, परियों की कहानी, उड़नखटोला, पुष्पक विमान आदि की कल्पना से इस भावना को बल मिलता है।

मुख्य अंश

वायुयान का आविष्कार

18वीं शताब्दी में हाइड्रोजन के गुब्बारे की उड़ान का चलन प्रारंभ, जर्मनी में 1897 ई. में प्रथम वायुयान की कल्पना, अमेरिका के राबर्ट ब्रदर्स द्वारा वायुयान का आविष्कार।

वायुयान की बनावट,

इसका शरीर, आगे एल्यूमीनियम का इंजन, जहाज़ के दोनों ओर पंखे, प्रोपेलन द्वारा वायुयान में गति, पहिए की सहायता से उड़ना तथा उतारना संभव।

वायुयान से लाभ तथा हानि – स्वयं विचार कर लिखें।

उपसंहार

वायुयान का उपयोग बढ़ रहा है, विभिन्न देशों तथा संस्कृतियों में एकता तथा मेल-मिलाप बढ़ाने में वायुयान की महत्त्वपूर्ण भूमिका, 'वसुधैव कुटुंबकम्' का स्वप्न साकार।

इसी प्रकार यदि आपको 'समय के सदुपयोग' विषय पर एक विचारात्मक निबंध लिखना है, तो इससे संबंधित सामग्री के संकलन के लिए किसी पुस्तक या पत्रिका की तलाश में समय न गँवाकर अपने घर या पड़ोस के किसी अनुभवी व्यक्ति से वार्तालाप द्वारा कुछ नए बिंदु मिल सकें तो लेना अच्छा ही रहेगा। समय से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के विचारबिंदु, सूक्ति, श्लोक आदि देना भी सार्थक सिद्ध होगा।

टिप्पणी

(ख) संक्षिप्त रूपरेखाएँ

संक्षिप्त रूपरेखाओं की आवश्यकता प्रायः तब पड़ती है, जब तुरंत निबंध लिखना हो, जैसे परीक्षा भवन में निबंध लगभग 30 या 40 मिनट में ही लिखना होता है। वहाँ पाठ्य सामग्री के चुनाव का समय नहीं होता। वहाँ अपने आप सामग्री का निर्धारण करते हुए निबंध लिखना होता है। ऐसे अवसर पर निबंध लेखन से पूर्व संक्षिप्त रूपरेखा बना लेना अच्छा रहता है। वैसे कुछ लोग बिना रूपरेखा के भी निबंध लिखना प्रारंभ कर देते हैं। आपको यदि जल्दी में भी निबंध लिखना हो, तो भी कम-से-कम उसकी संक्षिप्त रूपरेखा बना लेना अच्छा रहेगा। नीचे कुछ निबंधों की संक्षिप्त रूपरेखाएँ दी गई हैं इन्हें ध्यान से पढ़िए।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली के गुण-दोष *(विचारात्मक निबंध)*

प्रस्तावना	जीवन में शिक्षा का महत्त्व
मुख्य अंश	आधुनिक शिक्षा पद्धति, गुण-दोष, समाज के सभी वर्गों के लिए शिक्षा का समान अवसर।
	नवीन शिक्षा पद्धति, व्यक्तित्व के समन्वित विकास पर बल।
उपसंहार	आधुनिक शिक्षा पद्धति, व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक तथा चारित्रिक विकास में साधक।

उपर्युक्त रूपरेखा को पढ़ने के बाद आपको स्पष्ट हो गया होगा कि उनकी सहायता से निबंध लेखन सरल हो जाता है। लिखते समय हम किसी बिंदु को भूल न जाएँ, इसलिए उन्हें पहले से नोट कर लेना अच्छा रहता है। किंतु इन्हें संकेत मात्र समझना चाहिए। निबंध लिखते समय भाव या विचारों के प्रवाह में यदि कोई नए बिंदु ध्यान में आ जाएँ तो उन्हें लिख लेना चाहिए। साथ ही रूपरेखा में निर्धारित कोई बिंदु यदि अनावश्यक लगे, तो उसे छोड़ देने में भी संकोच नहीं करना चाहिए। आप जानते हैं कि प्रायः कुशल लेखक कागज़ पर रूपरेखा निर्माण किए बिना भी निबंध लिखना प्रारंभ कर देता है। रूपरेखा का निर्माण निबंध लेखन के समय उनके मस्तिष्क में स्वतः ही क्रमबद्ध होता रहता है। आप भी जब निबंध लेखन में अभ्यस्त हो जाएँगे, तो विस्तारपूर्वक रूपरेखा बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। परीक्षा भवन में निबंध का सवाल सबसे अंत में करना अच्छा रहता है। परंतु प्रक्रिया पहले से ही प्रारंभ कर देनी चाहिए, जैसे – निबंध के विषय का चुनाव। उसकी रूपरेखा उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ पर बना लेनी चाहिए। अन्य प्रश्नों के उत्तर देते समय यदि विषय से संबंधित बिंदु, कहावत, लोकोक्ति, श्लोक आदि याद आते जाएँ, उन्हें एक जगह पर लिखते जाना चाहिए। इसके लिए प्रश्न-पत्र की सहायता भी ली जा सकती है, अर्थात् प्रश्न-पत्र में दिए गए कवितांश तथा गद्यांशों में से उदाहरण स्वरूप अंश रेखांकित कर लेने चाहिए।

पाठगत प्रश्न 26.3

1. नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए। कथन सही हो तो उसके सामने (√) का निशान और गलत हो, तो (X) का निशान लगाइए:

(क) बिना रूपरेखा बनाए निबंध लिखा ही नहीं जा सकता ( )

(ख) निबंध की संक्षिप्त रूपरेखा में केवल मुख्य बिंदुओं का संकेत होता है। ( )

(ग) जल्दी में निबंध लिखना हो, तो उसकी विस्तृत रूपरेखा बनानी चाहिए। ( )

(घ) निबंध लिखते समय बनाई गई रूपरेखा का अक्षरशः पालन करना अनिवार्य है। ( )

(ङ) कुशल निबंध-लेखक कागज़ पर रूपरेखा बनाए बिना भी निबंध लिख सकता है। ( )

2. दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर पर सही (√) का चिह्न लगाइए–

निबंध की रूपरेखा लिख लेना आवश्यक है क्योंकि–

(क) हम निबंध के हर बिंदु को याद रखते हैं। ( )

(ख) निबंध का रूप स्पष्ट हो जाता है। ( )

(ग) सूक्तियों, उद्धरणों को प्रयोग कर सकते हैं। ( )

(घ) परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होते हैं। ( )

29.4 विषय-सामग्री का चुनाव

निबंध के विषय से संबंधित यदि कोई पुस्तक, निबंध या लेख मिल सके तो आप अवश्य पढ़ें उसे पढ़कर विषयानुरूप सूचनाएँ, भावनाएँ तथा विचार आदि को समझने में सरलता होगी। उदाहरण के लिए ताजमहल अथवा सम्राट अशोक विषय पर निबंध लिखने के लिए किसी ऐतिहासिक पुस्तक अथवा लेख का पढ़ना लाभदायक होगा। महात्मा गांधी अथवा जवाहरलाल नेहरू पर निबंध लिखने के लिए किसी पुस्तक से उनकी जीवनी पढ़ना आवश्यक है। प्रदूषण अथवा स्वास्थ्य रक्षा पर निबंध लेखन तो बिना संबंधित साहित्य का अवलोकन किए लिखा ही नहीं जा सकता।

लिखित सामग्री पढ़ने के साथ ही निबंध की विषय-वस्तु समझने में विद्वान तथा अनुभवी व्यक्तियों से वार्तालाप तथा विचार-विनिमय भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए 'देशाटन से लाभ', 'आत्मनिर्भरता', 'वन महोत्सव', 'विश्व शांति', 'पर्वत प्रदेश की यात्रा', 'बादल की आत्मकथा', 'यदि मैं डॉक्टर बन जाऊँ' आदि विषय ऐसे हैं, जिनसे संबंधित सामग्री के चुनाव में पुस्तकों की अपेक्षा आपस में अथवा बड़ों से विषय पर चर्चा करना अधिक सहायक हो सकता है।

किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना, स्थिति या अनुभूति संबंधी विषय पर निबंध लिखने में लेखक का अपना ज्ञान, अनुभव तथा निरीक्षण सबसे उपयोगी होता है। उदाहरण के लिए किसी त्योहार, दृश्य, यात्रा आदि का वर्णन करते समय लेखक केवल अपने

अनुभव तथा विचारों का ही सहारा ले सकता है। इसी प्रकार 'यदि मैं पक्षी होता', 'भिखारी की आत्मकथा', 'मेरी माँ', 'पुस्तक की आत्मकथा' जैसे भावात्मक तथा कल्पना-प्रधान निबंध आप अपने निरीक्षण, कल्पना, भावुकता तथा अनुभूति की सहायता से लिख सकते हैं। हाँ, विचार प्रधान तथा साहित्यिक निबंधों के लेखन में अन्य स्रोतों से भी सामग्री का संकलन कर लेना अच्छा रहता है। इस प्रकार संगृहीत महत्त्वपूर्ण विचारों को क्रमबद्ध रूप से संकलित किया जाना चाहिए तथा अनुच्छेदों में उन्हें व्यवस्थित ढंग से रखा जाना चाहिए। आवश्यकतानुसार उद्धरणों का चुनाव भी किया जाना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 29.4

1. निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए। यदि कथन सही है तो उसके सामने (√) का निशान और गलत है, तो (X) का निशान लगाइए:

   (क) निबंध लिखने से पूर्व विषय सामग्री का संकलन आवश्यक नहीं। ( )

   (ख) विषय सामग्री का चुनाव अनेक तरीकों से किया जाता है। ( )

   (ग) भावात्मक निबंध के लेखन में लेखक का निरीक्षण तथा अनुभव उपयोगी होता है। ( )

   (घ) विचारात्मक निबंध कल्पना के सहारे लिखा जा सकता है। ( )

2. किसी ऐतिहासिक विषय पर निबंध लिखने की क्या तैयारी करनी चाहिए?

29.5 निबंध के प्रकार

किसी विषय पर निबंध लिखने से पहले हम अपने अनुभव के आधार पर यह निश्चित करते हैं कि विषय का विवेचन कैसे करें। एक निबंध में घटनाओं के वर्णन की प्रधानता हो सकती है, तो दूसरे में भावना या विचार की। किसी निबंध को लिखते समय हम कल्पना की उड़ान भरते हैं, तो किसी के लेखन में साहित्य का सहारा लेते हैं। कभी-कभी एक ही विषय पर हम अनेक प्रकार से निबंध लिख सकते हैं। उदाहरण के लिए ताजमहल से संबंधित सूचनाओं के आधार पर घटना या दृश्य का वर्णन करते हैं, तो यह वर्णनात्मक निबंध बन जाएगा। लेकिन यदि हम संस्कृति और सभ्यता के प्रतीक के रूप में ताजमहल के महत्त्व का विवेचन करते हैं, तो यह विचारात्मक निबंध कहलाएगा। यदि हमारे लेख में ताजमहल के कलात्मक सौंदर्य का भावना प्रधान विवेचन होता है, तो यह भावात्मक निबंध बन जाता है। किंतु यदि विभिन्न कवियों और साहित्यकारों के ताजमहल संबंधी दृष्टिकोण का आलोचनात्मक विवेचन करते हुए निबंध लिखा जाता है, तो यह साहित्यिक निबंध माना जाएगा। हाँ, यह भी संभव है कि एक ही निबंध में ये सभी विशेषताएँ समाहित कर दी जाएँ। अतः हम कह सकते हैं कि विषयवस्तु के विवेचन की दृष्टि से निबंध चार प्रकार के माने जा सकते हैं। ये हैं:

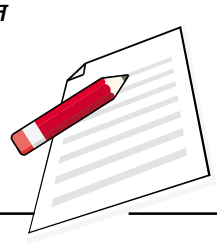

1. वर्णनात्मक निबंध
2. विचारात्मक निबंध
3. भावात्मक निबंध
4. साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध

1. वर्णनात्मक निबंध

किसी त्योहार, जैसे – होली, दीवाली, ईद या क्रिसमस; यात्रा, दृश्य, स्थान या घटना, गणतंत्र दिवस की परेड, ताजमहल, ओलंपिक खेल आदि पर लिखे गए निबंध प्रायः **वर्णनात्मक निबंध** कहलाते हैं। इनमें वर्णन या विवरण की प्रधानता होती है। इनके लेखन में पहले विषय से संबंधित सूचना या विवरण का चुनाव किया जाता है। उदाहरण के लिए गणतंत्र दिवस की रूपरेखा इस प्रकार होगी:

गणतंत्र दिवस *(वर्णनात्मक निबंध)*

प्रस्तावना

किसी भी देश में उसके धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय त्योहारों का विशेष महत्त्व होता है। ये देश की संस्कृति, परंपरा, मेल-जोल, एकता तथा आत्मविश्वास के प्रतीक होते हैं। राष्ट्रीय त्योहार देशवासियों में देशभक्ति, स्वाभिमान, स्वतंत्रता तथा राष्ट्रीय भावना का विकास करते हैं। भारत का गणतंत्र दिवस ऐसा ही राष्ट्रीय त्योहार है। इस पर्व को हम हर वर्ष 26 जनवरी को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं।

मुख्य अंश

गणतंत्र का अर्थ है सामुदायिक व्यवस्था। सन् 1950 ई में 26 जनवरी को ही भारत का संविधान लागू किया गया। इसी दिन भारत को सर्वप्रथम प्रभुता संपन्न, लोकतंत्रात्मक गणराज्य घोषित किया गया। यही दिन था जब डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने। 26 जनवरी को ही यह सौभाग्य क्यों प्राप्त हुआ? इसके कुछ ऐतिहासिक कारण हैं। लाहौर में रावी नदी के तट पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ, जिसके सभापति पं. जवाहरलाल नेहरू थे। उन्होंने इसी दिन पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने की घोषणा की। अगले वर्ष सन् 1930 में 26 जनवरी को ही तिरंगा झंडा फहराकर पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रतिज्ञा दोहराई गई। स्वतंत्रता प्राप्ति तक यह दिन इसी रूप में बार-बार मनाया जाता रहा। यही कारण है कि स्वतंत्र भारत के संविधान को लागू करने के लिए इसी दिन को चुना गया। इसी दिन को हम गणतंत्र दिवस कहते हैं।

प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को भारत की राजधानी दिल्ली, राज्य के मुख्यालय, जिला, तहसील, सरकारी और गैर सरकारी संस्थान तथा शिक्षा संस्थाओं में गणतंत्र दिवस का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। चारों ओर हर्ष और उल्लास का वातावरण रहता है। दिल्ली में इंडिया गेट पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात् राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। राजपथ पर एक विशाल परेड का आयोजन होता है,

जिसे देखने के लिए देश-भर से लाखों लोग आते हैं ये लोग राजपथ तथा इंडिया गेट से लाल किले तक जाने वाली सड़क के दोनों ओर परेड देखने के लिए एकत्र हो जाते हैं। प्रातः नौ बजे राष्ट्रपति के आगमन के पश्चात् परेड शुरू होती है। सेना के तीनों अंगों–जल, थल तथा वायुसेना की टुकड़ियाँ मार्च करती हुई राष्ट्रपति को सलामी देती हैं। इनके पीछे पुलिस, एन. सी. सी. कैडेट तथा स्कूली बच्चों की टुकड़ियाँ होती हैं। अंत में अनेक राज्यों की सांस्कृतिक झाँकियाँ निकलती हैं। इसके साथ ही लोक नर्तकों के दल अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए राजपथ पर आते हैं। वायु सेना के करतब के साथ गणतंत्र दिवस की परेड समाप्त होती है।

सायंकाल में राष्ट्रपति भवन, संसद भवन तथा अन्य सरकारी तथा गैर सरकारी भवनों पर रोशनी की जाती है। रात में कवि-सम्मेलन, मुशायरा तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। राज्य की सभी राजधानियों, नगर, कस्बों तथा विद्यालयों में भी 26 जनवरी को इसी प्रकार के जलूस निकाले जाते हैं। राष्ट्र-ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रगान होता है। खेल-कूद की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। रात को रोशनी की जाती है तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

उपसंहार

गणतंत्र दिवस पर हर भारतवासी आनंद तथा उल्लास से भर जाता है। यह दिन हमारे लिए प्रेरणादायक भी होता है। हम उन अमर शहीदों को श्रद्धा से नमन करते हैं, जिन्होंने देश को आजादी दिलाने के लिए अपना तन-मन-धन, सब कुछ अर्पित कर दिया। उनका बलिदान हमें प्रेरणा देता है कि अपने देश की खुशहाली के लिए हम ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ देश की प्रगति में अपना योगदान दें। हम देश की एकता तथा अखंडता की रक्षा के लिए हर प्रकार का त्याग तथा बलिदान करने का व्रत भी लेते हैं।

2. विचारात्मक निबंध

विचारात्मक निबंध के अंतर्गत साहस, उत्साह, श्रद्धा, घृणा जैसे मनोवैज्ञानिक; अछूतोद्धार, विधवा-विवाह जैसे सामाजिक; राष्ट्रीय एकता, विश्वबंधुत्व जैसे राजनीतिक तथा ईश्वर, आत्मा जैसे दार्शनिक विषय आते हैं। विचार या चिंतन की प्रधानता होने के कारण इन्हें **विचारात्मक निबंध** कहते हैं।

इन निबंधों में स्थिति या समस्या का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाता है। विषय के विभिन्न पक्षों पर चिंतन-मनन करते हुए उनकी समालोचना या गुण-दोषों का विवेचन किया जाता है। इसी प्रकार गहन विचार और चिंतन-मनन से जुड़े आपने अपनी पुस्तकों में 'कुटज' और 'क्रोध' नामक विचारात्मक निबंध अवश्य पढ़े होंगे।

विचारात्मक निबंधों में किसी एक समस्या को उठाकर उनके विभिन्न पक्षों पर विचार किया जाता है। समस्या के पक्ष-विपक्ष पर तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं। विभिन्न उदाहरणों द्वारा अपने विचार की पुष्टि की जाती है। तथ्यों का विवेचन करते समय पाठक को ध्यान में रखकर चित्र, ग्राफ या आरेख आदि का उपयोग किया जाता है। इन निबंधों की शैली गंभीर होती है। उदाहरण स्वरूप आपके लिए 'भारत में जनसंख्या वृद्धि की समस्या' नामक समस्यात्मक निबंध की विस्तृत रूपरेखा दी जा रही है।

टिप्पणी

भारत में जनसंख्या वृद्धि – एक समस्या

प्रस्तावना

किसी देश में बसने वाले नागरिक उस देश की जनसंख्या होते हैं। भारत देश की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। विश्व में सबसे अधिक लोग चीन में रहते हैं उसके बाद भारत का दूसरा स्थान है। किसी भी देश की जनसंख्या परिवर्तित होती रहती है। अनुकूल परिस्थितियों में यह बढ़ती है वहीं किसी बीमारी या आपदाकालीन स्थितियों में अधिक मृत्यु होने के कारण यह घट जाती है। इंदिरा गांधी ने भी जनसंख्या वृद्धि की ओर विचार किया और कहा कि ''हमने बहुत प्रगति की है, परंतु विकास की उपलब्धियाँ को तीव्र जनसंख्या वृद्धि ने नगण्य बना दिया है।'' यदि एक वर्ष में पैदा होने वाले बच्चों की संख्या यानी जन्मदर में से मरने वालों की संख्या यानी मृत्युदर को घटा दें तो वही जनसंख्या वृद्धि का स्वरूप है।

भारत में प्रति मिनट 52 बच्चे पैदा होते हैं। भारत के लिए यह समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है। सन् 2000 तक भारत की कुल आबादी बढ़कर एक अरब हो गई थी। आज उससे भी कहीं अधिक हो चुकी है।

मुख्य अंश

जनसंख्या वृद्धि के कारण

हमारे देश में जनसंख्या वृद्धि के अनेक कारण हैं, जैसे–चिकित्सा सुविधाओं का योगदान, तरह-तरह की दवाइयों, चिकित्सा पद्धतियों और वैज्ञानिक उपकरणों की खोज के कारण मृत्युदर पर तो अवश्य नियंत्रण कर लिया किंतु जन्मदर पर नियंत्रण पा सकने में असमर्थ रहे, जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि होती जा रही है।

अशिक्षा तथा अंधविश्वास

भारत विकसित राष्ट्र होने की ओर तेज़ी से बढ़ रहा है लेकिन अभी भी जनता का बहुत बड़ा हिस्सा गाँवों में रहता है जहाँ गरीबी, अशिक्षा और अंधविश्वास का बोलबाला है। अशिक्षा के कारण लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी साफ़ दिखाई देती है। इसलिए वे इस बात को कोई महत्त्व ही नहीं देते कि अधिक बच्चे होने से क्या-क्या समस्याएँ हो सकती हैं। अशिक्षा के कारण उन्हें जनसंख्या वृद्धि रोकने के कारण की जानकारी कम होती है। यदि उन्हें कुछ पता चल भी जाता है तो अंधविश्वास के कारण वे इन उपायों को प्रयोग में लाने से डरते हैं।

यद्यपि सरकार ने विवाह के लिए कानून बना दिया है कि लड़की 18 वर्ष, लड़का 21 वर्ष का हो तभी विवाह करें, उससे पूर्व नहीं। किंतु बहुत से सामाजिक वर्ग अभी भी इन नियमों को नहीं मानते। इस कारण से समस्याएँ बढ़ती जाती हैं।

समाज में ऐसी धारणा है कि लड़का ही माँ-बाप के बुढ़ापे का सहारा है। यदि लड़का नहीं हुआ तो खानदान का नाम डूब जाएगा, अतः लड़के की प्रतीक्षा में लड़कियाँ पैदा होती जाती हैं।

- बाल विवाह या कम उम्र में विवाह
- लड़का, लड़की में अंतर
- भूमि तथा आवास की समस्या
- संसाधनों, पर्यावरण पर कुप्रभाव
- बेरोजगारी तथा अपराधीकरण की समस्या

जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएँ

अधिक लोगों को अधिक ज़मीन की आवश्यकता पड़ती है। भूमि का क्षेत्रफल निश्चित है और जनसंख्या अनिश्चित गति से बढ़ती जा रही है। इसके कारण जहाँ कृषि-योग्य भूमि छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट जाती है और उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ता है वहीं बहुत से लोगों को रहने के लिए मकान नहीं मिल पाते। यदि मिल भी जाते हैं तो उनमें इतने लोग रहते हैं कि अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। साथ ही बड़ी संख्या में लोगों को हर मौसम में फुटपाथ या सड़क के किनारे सोना पड़ता है।

बढ़ती जनसंख्या के लिए मूलभूत सुविधाएँ और अन्य सुविधाएँ चाहिए, जिन्हें उपलब्ध कराने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जा रहा है। जंगल काटे जा रहे हैं, पानी की समस्या उत्पन्न हो रही है। इसी प्रकार के अन्य प्राकृतिक संसाधनों की कमी हो रही है जिससे पर्यावरण असंतुलित हो रहा है, जो अंततः मानव के लिए विनाशकारी सिद्ध होगा। बढ़ती जनसंख्या के कारण अनेक प्रकार का प्रदूषण भी बढ़ता जाता है।

रोजगार के सीमित क्षेत्रों के चलते इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए काम उपलब्ध करवाना लगातार कठिन होता जा रहा है। इसका परिणाम यह होता है कि जनसंख्या का बड़ा हिस्सा अपराध-कर्म की ओर उन्मुख होता है।

भारत की बढ़ती जनसंख्या 1901 से 1991 तक : एक द ष्टि

जनगणना का वर्ष	कुल जनसंख्या करोड़ में	प्रति 1000 की जनसंख्या में जन्मदर	प्रति 1000 की जनसंख्या में म त्युदर	ग्रामीण जनसंख्या	शहरी जनसंख्या
1901	23.84	–	–	89.2	10.8
1911	25.21	49.2	42.6	29.7	10.3
1921	25.21	48.1	47.2	88.8	11.2
1931	27.09	46.4	36.2	88.0	12.0
1941	31.87	45.9	37.2	86.0	13.9
1951	36.11	39.9	27.4	82.7	17.3
1961	43.92	41.7	23.8	82.0	18.0
1971	54.82	41.2	19.0	80.10	19.9
1981	68.52	37.2	15.0	76.7	23.3
1991	84.62	29.0	10.0	74.3	25.7
2001	102.87	-	-	74.24	28.61

उपसंहार

भारत में जनसंख्या बढ़ने से प्राकृतिक संसाधनों की कमी होती जा रही है, अनेकानेक समस्याएँ बढ़ती चली जा रही हैं। यदि यही बढ़ते नागरिक कड़ी मेहनत और लगन के साथ देश की प्रगति में अपना हाथ बटाएँ तब क्या हम अपने देश भारत के लिए सफलता की नई राह नहीं खोल सकते! सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश चीन ने विश्वपटल पर छा

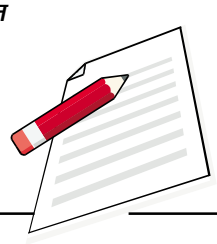

कर एक उदाहरण पहले ही प्रस्तुत कर दिया है। अतः भारत भी सभी को पीछे छोड़ उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

3. भावात्मक निबंध

भावना प्रधान विषयों पर लिखे गए निबंध **भावात्मक निबंध** कहलाते हैं, जैसे– वसंतोत्सव, चाँदनी रात, बुढ़ापा, बरसात का पहला दिन, मेरे सपनों का भारत आदि। इसमें कल्पनात्मक निबंध भी आते हैं। कल्पनात्मक निबंध के उदाहरण हैं–'यदि मैं प्रधानमंत्री होता', 'मेरी अभिलाषा', 'नदी की आत्मकथा' आदि।

इस प्रकार के निबंधों में चिंतन की प्रधानता न होकर भावना की प्रधानता होती है। यहाँ लेखक का व्यक्तित्व भी झलकता है। भावात्मक निबंध पढ़ते समय पाठक को कविता पढ़ने जैसा आनंद आता है। इन निबंधों की भाषा कोमल शब्दों से युक्त सरस तथा काव्यात्मक होती है। कल्पनात्मक निबंध में लेखक अपनी सूझ-बूझ तथा कल्पना को मूर्त रूप देने के लिए विषय के अनुसार आलंकारिक भाषा का प्रयोग करता है। उदाहरण के लिए भावात्मक निबंध का यह नमूना देखते हैं।

फूल की आत्मकथा (भावात्मक निबंध)

मेरा जन्म एक मनोहर उद्यान में हुआ। कली के रूप में मेरा बचपन डाली की गोद में हँसते-खेलते बीता। पवन मुझे झूला झुलाती थी और चिड़िया गीत गाकर लोरी सुनाती थी। कभी-कभी तेज़ हवा मुझे झकझोर भी देती थी, काँटे मुझे आघात पहुँचाते, किंतु मैं कभी भी भयभीत नहीं हुआ। हँसते-हँसते इन कठिनाइयों का सामना करता। सदा प्रसन्न रहता। इसीलिए लोग मुझे सुमन भी कहा करते हैं।

प्रातः काल ओस के जलकण मेरा मुँह धोते और सूर्य की कोमल किरणों के स्पर्श से मैं खिलखिलाने लगता। धीरे-धीरे मैं बड़ा होने लगा। अब तितलियाँ मेरे चारों ओर मँडराने लगीं। मधु-मक्खियाँ मेरी सुगंध से खिंची आतीं और मैं उन्हें मधुपान कराता। मैं जब खिलखिलाकर हँसता, तो चारों ओर खुशी की लहरें दौड़ जातीं। लोग मुझे देखते, तो देखते ही रह जाते। उनकी प्रसन्नता को देख मैं भी आनंदित होता। हँसना ही मेरा काम था। उदासी और निराशा से तो मेरा दूर-दूर का भी नाता न था।

बगिया में मेरे बहुत से दोस्त थे जूही, चंपा, चमेली, मोतिया, रातरानी, गेंदा, गुलाब आदि। हम सब एक साथ झूला झूलते, हँसते, गाते और खुशी मनाते। प्रकृति के सभी सुखों को मिल-जुलकर भोगते। आँधी, तूफान, बारिश और ओले का भी एक-साथ एक जुट होकर सामना करते। अगर दुर्भाग्य से हमारा कोई साथी डाल से टूट कर गिर जाता, तो हम सभी दुखी हो जाते। उसके वियोग में हमारे आँसू थमते ही न थे। प्रातःकाल की समीर हमारे आँसू पोंछती। चिड़ियों का संगीत हमें दिलासा देता। इस प्रकार दुख में भी मुस्कराते रहने की प्रेरणा हमें मिली। हम सभी मित्र अपने परिवार सहित सुख-दुख का आनंद लेते हुए अपने दिन प्रसन्नतापूर्वक बिताते रहे।

जीवन के अंतिम क्षणों में मैं सोचने लगा कि इस क्षण-भंगुर संसार में कुछ भी तो स्थायी नहीं। फिर भला लोग सुख में गर्व और दुख में चिंता क्यों करते हैं? हाँ, यह सोचकर कष्ट अवश्य हुआ कि मुझ जैसा जीव जिसने सदा दूसरों को सुख और

आनंद ही प्रदान किया, बदले में उसे क्या मिला? दूसरों के लिए अपना तन-मन-धन सब कुछ समर्पित कर देने वाले को अंत में क्या सुख शांति से मरने का भी अधिकार नहीं, संसार इतना निष्ठुर क्यों है? उसमें प्रेम, दया और करुणा की भावना क्यों नहीं जागती? वह त्याग के मूल्य को क्यों नहीं समझता? मेरी अंतिम इच्छा यही है कि आने वाली पीढ़ियाँ मेरे इन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर देकर मुझे कृतार्थ करें।

4. साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध

किसी साहित्यकार, साहित्यिक विधा या साहित्यिक प्रवृत्ति पर लिखा गया निबंध **साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध** कहलाता है, जैसे – मुंशी प्रेमचंद, तुलसीदास, आधुनिक हिंदी कविता, छायावाद, हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग आदि। इसमें ललित निबंध भी आते हैं। इनकी भाषा काव्यात्मक और रसात्मक होती है। इन्हें पढ़ते समय कविता जैसा आनंद आता है आपने दूसरी पुस्तक में आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का 'कुटज' निबंध पढ़ा है यह एक प्रकार का ललित निबंध हैं आजकल नए निबंधकार ललित निबंध खूब लिख रहे हैं। आलोचनात्मक निबंध लिखने से पहले आवश्यक है कि विषय से संबंधित सामग्री का विस्तृत अध्ययन कर लिया जाए। उदाहरण के लिए किसी साहित्यकार के विषय में लिखने से पूर्व उसकी जीवनी तथा रचनाओं के साथ ही उस पर लिखी हुई समालोचना भी पढ़ लेनी चाहिए। यह सामग्री सुनिश्चित रूप से अधिक मात्रा में इधर-उधर बिखरी हुई होगी। निबंध लिखते समय आवश्यकतानुसार लेखक की रचनाओं से उद्धरण लेकर अपने विचार या दृष्टिकोण की पुष्टि भी की जानी चाहिए। साहित्यिक निबंध के लेखन में विषय के अनुरूप भाषा प्रवाह तथा शैली का प्रयोग बहुत ज़रूरी है। ऐसे निबंध शोध-पत्र के रूप में अधिक लिखे जाते हैं। अतः उच्च कक्षाओं में इनकी आवश्यकता होती है। उदाहरण के रूप में आपके लिए समाज सुधारक कवि 'कबीर की काव्य साधना' नामक आलोचनात्मक निबंध की विस्तृत रूपरेखा दी जा रही है।

कबीर की काव्य साधना

प्रस्तावना

काल की कठोर आवश्यकताओं से महान आत्माओं का जन्म, मुसलमानों की कट्टरता और हिंदुओं की रूढ़िवादिता को चुनौती देने वाला कवि कबीर। धर्म, समाज, विश्वास और परंपरा की कुरीतियों को समाप्त करने का सफल प्रयास।

मुख्य अंश

लगभग 500 वर्ष पूर्व जन्मे कबीर अनपढ़ (मसि कागद छुयो नहीं) होने पर भी निडर और साहसी, स्वभाव से फक्कड़ और मस्त (कबिरा खड़ा बाजार में ....), धार्मिक तथा सांप्रदायिक संकीर्णताओं से मुक्त (जो कबिरा काशी मरे, रामहिं कौन निहोरा) उनके व्यक्तित्व में भक्त, कवि और समाज सुधारक की सुंदर त्रिवेणी विद्यमान थी।

कबीर ने हिंदू-मुसलमान दोनों को सावधान किया (अरे इन दोउन राह न पाई) मुल्ला और पंडित की आचरणहीनता पर प्रहार, धर्मग्रंथ की आड़ में छल-कपट करने वालों से सभी को सावधान किया (पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ.........)।

कबीर का ईश्वर सर्वव्यापक, मूर्ति पूजा का विरोध (पाहन पूजे हरि मिले....), कबीर के रहस्यवाद में सूफीमत का आभास (हरि मोर पीउ, मैं राम की बहुरिया।)

कबीर की कविता में भाव और कला पक्ष दोनों ही श्रेष्ठ। कविता में बुद्धितत्त्व की प्रधानता; यथार्थ जीवन का प्रतीकात्मक चित्रण (पानी केरा बुदबुदा अस मानुस की जात.....); अलंकार तथा कल्पना तत्त्व से युक्त काव्य; भाषा सधुक्कड़ी तथा सामान्य बोलचाल की।

उपसंहार

स्वाभाविकता कबीर की कविता का प्राण, उनकी वाणी हृदय को छूने वाली और बाह्य-आडंबर को तीखे व्यंग्य से ध्वस्त करने वाली। कर्मकांड का खंडन कर पवित्र मन से ईश्वर में विश्वास। कबीर के लिए 'ढाई आखर प्रेम का.....' ही सर्वश्रेष्ठ।

पाठगत प्रश्न 29.5

1. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति केवल एक शब्द लिखकर कीजिए।
   (क) .....निबंध में किसी व्यक्ति, स्थान या घटना के विवरण का क्रमबद्ध विवेचन किया जाता है।
   (ख) चिंतन-प्रधान निबंध को .....निबंध कहते हैं।
   (ग) भावात्मक निबंध प्राकृतिक .....तथा कोमल विषय पर लिखे जाते हैं।
   (घ) आलोचनात्मक निबंध लिखते समय विचार और घटनाओं के वर्णन के साथ ही.....के प्रवाह को बनाए रखना भी आवश्यक है।
2. निबंध लेखन के समय तालिका, पाई चार्ट, ग्राफ आदि का प्रयोग क्यों किया जाता है? किस प्रकार के निबंधों के लिए इनका उपयोग उपयुक्त माना गया है।

29.6 आपने क्या सीखा

1. निबंध को लेखन का एक ऐसा रूप कहा जा सकता है, जिसमें भावों या विचारों को क्रमानुसार और शृंखलाबद्ध रूप से व्यक्त किया जाता है।
2. निबंध की भाषा विषय के अनुरूप रखी जाती है। उसमें कसावट तथा प्रभाव का होना आवश्यक है।
3. निबंध लेखन से पूर्व विभिन्न स्रोतों से सामग्री का चुनाव किया जाता है। संकलित सामग्री को विषय के अनुरूप एक खाके में रखना ही रूपरेखा कहलाती है। ये दो प्रकार की होती हैं–विस्तृत और संक्षिप्त रूपरेखा।
4. निबंध के तीन अंग होते हैं–

   प्रस्तावना : संक्षिप्त, रोचक तथा विषय-वस्तु को स्पष्ट करने वाली होती है।

टिप्पणी

मुख्य अंश : में निबंध की विषयवस्तु का विस्तृत विवेचन किया जाता है।

उपसंहार : निबंध का अंत उपसंहार से होता है, जिसमें लेखक का निष्कर्ष या मंतव्य प्रकट होता है।

5. निबंध मूलतः चार प्रकार के होते हैं–
   - **वर्णनात्मक निबंध** वर्णन और विवरण से युक्त होता है।
   - **विचारात्मक निबंधों** के विषय मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, राजनीतिक अथवा दार्शनिक चिंतन से संबंधित होते हैं।
   - **भावात्मक निबंध** विभिन्न भावों पर लिखे जाते हैं, जैसे 'क्रोध, घृणा, श्रद्धा' आदि।
   - **साहित्यमक या आलोचनात्मक निबंध** में किसी साहित्यकार, विधा या साहित्यिक प्रवृत्ति का विवेचन होता है।

6. निबंध की भाषा-शैली विषय के अनुरूप परिवर्तित होती है, जैसे किसी भावात्मक निबंध की भाषा-शैली भावपूर्ण, आलंकारिक और सरल होगी जबकि किसी वैज्ञानिक निबंध की भाषा तथ्य-परक और सपाट होगी।

29.7 योग्यता विस्तार

1. विभिन्न विषयों पर लिखे गए निबंधों की अच्छी पुस्तकें लेकर उन्हें पढ़िए तथा निम्नलिखित क्रियाएँ कीजिए:

   (क) निबंध में बताए गए गुणों की दृष्टि से अच्छे निबंधों की सूची बनाइए।

   (ख) प्रत्येक निबंध का प्रभाव (वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक आदि) निश्चित कीजिए।

   (ग) प्रस्तावना, मुख्य अंश तथा उपसंहार की दृष्टि से अच्छे निबंधों को छाँटिए।

   (घ) पढ़े हुए निबंध लेकर उनकी विस्तृत और संक्षिप्त रूपरेखा सुनिश्चित कीजिए।

2. पाठ्य पुस्तक में निर्धारित निबंधों को पढ़कर निम्नलिखित क्रिया-कलाप कीजिए:

   (क) प्रत्येक निबंध के प्रकार का निश्चय।

   (ख) भाव या विचार तथा भाषा-शैली की दृष्टि से प्रत्येक निबंध की समालोचना या गुण-दोष का विवेचन।

3. विभिन्न प्रकार के निबंधों के लिए विषयों का चुनाव कीजिए तथा प्रत्येक प्रकार के कुछ निबंध स्वयं लिखिए।

4. साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं, जैसे – कादंबिनी, हंस, साहित्य अमृत, अक्षरा, विकल्प आदि का अध्ययन कीजिए।

5. इंटरनेट पर निम्नलिखित वेब साइट खोलकर एक-एक हर प्रकार का निबंध पढ़िए: (अभिव्यक्ति कॉम abhivyakti.com)

टिप्पणी

29.8 पाठांत प्रश्न

1. अच्छे निबंध में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?
2. निबंध के अंगों के नाम लिखिए तथा प्रत्येक का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।
3. निबंध कितने प्रकार के होते हैं? सोदाहरण परिचय दीजिए।
4. (क) निम्नलिखित विषयों की विस्तृत प्रस्तावना लिखिए:
   मेरा देश, मेरा प्रिय कवि, वसंत ऋतु

   (ख) निम्नलिखित की संक्षिप्त प्रस्तावना लिखिए:
   यदि मैं डॉक्टर होता, एक दिवस जेल में, दीपों का पर्व – दीपावली
5. निम्नलिखित रूपरेखा के अनुसार निबंध लिखिए:

(क) पुस्तकालय से लाभ

प्रस्तावना

पुस्तकालय की आवश्यकता – ज्ञान का जीवन में महत्त्व, ज्ञान प्राप्त करने के अनेक साधन–निरीक्षण, सत्संग, पर्यटन और पठन, पुस्तकें ज्ञान-प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन।

मुख्य अंश

पुस्तकालय के प्रकार – विद्यालय, महाविद्यालयों अथवा विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय, सार्वजनिक पुस्तकालय, चलते-फिरते पुस्तकालय, निजी पुस्तकालय, उनसे पुस्तकें प्राप्त करने के भिन्न-भिन्न नियम।

पुस्तकालय की पुस्तकों का उपयोग : बालक तथा युवाओं के लिए पुस्तकालय में ज्ञानदायक तथा सुरुचिपूर्ण पुस्तकों का क्रमानुसार संकलन, पुस्तकों का वितरण-सप्ताह, पक्ष या मास के लिए, पुस्तकों की उचित देखभाल, सही उपयोग तथा पढ़ लेने के बाद तुरंत वापसी आवश्यक।

उपसंहार

पुस्तकालय की पुस्तकों का वितरण सप्ताह, पक्ष या मास के लिए, पुस्तकों का पठन आवश्यक ज्ञानार्जन तथा मनोरंजन दोनों ही पुस्तकों से संभव, सामान्य व्यक्ति के लिए पुस्तकें खरीदना संभव नहीं, अतः अधिक सार्वजनिक पुस्तकालयों की व्यवस्था अनिवार्य।

(ख) प्रदूषण की समस्या

प्रस्तावना – प्रकृति की पवित्रता, विज्ञान द्वारा दूषित पर्यावरण

मुख्य अंश – औद्योगिक विकास तथा प्रदूषण, वन और जल पर दुष्प्रभाव।
जनसंख्या-वृद्धि से आवश्यकताओं में वृद्धि, प्रदूषण।
प्रदूषण की समस्या का समाधान, सफ़ाई तथा वृक्षारोपण।

उपसंहार – प्रदूषण की समस्या-आज की सभ्यता के लिए भयानक चुनौती: इस पर विजय प्राप्त करना अनिवार्य।

(ग) यदि मेरे पंख होते

- उड़ने की इच्छा स्वाभाविक– स्वतंत्रता की द्योतक।
- उड़कर इच्छित स्थान पर घूमना संभव।
- बिना किसी बंधन के प्रकृति के विभिन्न दृश्यों का आनंद लेना।
- बाढ़, भूकंप तथा बर्फ से घिरे लोगों की सहायता करता।
- पंख लगाकर लोक में भी अलौकिक बन जाता।

(घ) सुनामी में उजड़े गाँव की आत्मकथा

- सुनामी की ऊँची-ऊँची लहरों के थपेड़े कैसे बहा ले गए सब कुछ।
- चारों ओर पानी ही पानी, दिल दहलाने वाला दृश्य।
- मानवों के साहसिक कार्य।
- वर्तमान स्थिति–परिस्थितियों से जूझते लोग, सुनामी के दुष्प्रभाव।
- सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं का सहयोग।
- आशा की किरण।

6. नीचे दिए गए विषयों पर निबंध लिखिए:

मेरा बचपन, वर्षा ऋतु, यदि मैं प्रधानमंत्री होता, सूरदास, आधुनिक हिंदी कविता, मादक पदार्थ – हमारे दुश्मन, जाता बचपन आती युवावस्था; बगीचे में एक दिन

29.9 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

29.1 1. (क) √ (ख) X (ग) √ (घ) X 2. (घ)

29.2 (क) प्रस्तावना (ख) विवेचन/वर्णन
(ग) अनुकूल/अनुसार/अनुरूप (घ) उपसंहार

29.3 1. (क) X (ख) √ (ग) X (घ) X (ङ) √ 2. (ख)

29.4 1. (क) X (ख) √ (ग) √ (घ) X

2. संबद्ध ऐतिहासिक व्यक्ति अथवा व्यक्ति की जानकारी प्राप्त करने के लिए पुस्तकें पढ़नी आवश्यक हैं।

29.5 1. (क) वर्णनात्मक (ख) विचारात्मक (ग) सौंदर्य (घ) भाषा

2. आँकड़ों और तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए; विचारात्मक निबंधों के लिए।